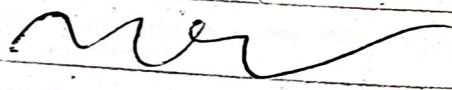


यह रूप से जिनकी व्याख्या व्याख्या 115  
 \* एक सान या लक्ष्य है जिनकी व्याख्या व्याख्या 115  
 \* जोवन में अवतल और उपमागिता नहीं बदरित  
 \* है जोवन है जिसे फलवाट उ प्रस लिहाह उ आषा  
 \* या किसान मारे वाठित उ उन लक्ष्य इ अलक्ष्य  
 \* मान लगे कही श्वादि लक्षित उ सान इ मी ही  
 \* महत्व ही लक्षित सान ही व्याख्या उ मी से लक्ष  
 \* विशेष या अवकृत होते ही उन लिहाहों के लक्ष्य  
 \* वाद में चरुट होती है मतः कदा जा लक्ष्य है डि  
 \* फलवाट में उपमागिता इ लक्ष्य के इलाही लक्ष्य  
 \* में माना जा लक्ष्य है इवल उपमागिता इ आषा  
 \* या लक्ष्य इ परिभाषित नहीं डिफा जा लक्ष्य





11

उन्होंने गणित के लघु से व्यापक व्यापक  
 पाशु जेसल से श्ल लमफावा वापी दिये के निमित्त  
 शिलरुन और शिली ने भी उन्निवारण काँ लघुमाम  
 लघु से विस्तृत ही गही लगीआ डिपा है। जेसल के  
 गणित के अनिवासे लघु से दुनाती देत इह शिलरु  
 ने बलापा डि विमान और गणित के लघुमी लघु  
 और बाल्याइ होत है जेके  $2+2=4$  तमी लघु  
 होगा जस बलुको डा अलम-इ अलमल्य होगा। मरि  
 बलुको डा अलम-अलम अलितक गही होगा तमी  $2+2$   
 गही होगा। जेके पागी उ दो वृत्त काँ पुनः दो वृत्त  
 से लउ हीं व्यान पा गिराए ता एउ वृत्त रहेगा एल  
 होइ शोर काँ दो बली एउ हीं व्यान पा रहे ता  $2+2$   
 हीं लघुमी। इलडा अर्थ यह है डि लघु अक्रिया  
 काँ निरपेक्ष तया व्यापी गही होत। लघु मानकी  
 अर्थ पा गिराए गता है। अर्थात् लघु लोपाधिक  
 होता है।

रामोक्षा:- अर्थ डिपा काही रूप है लिहांत की अनंत  
 विचारों द्वारा बहुत अधिक आलोचना की गई है।  
वैदिक सिद्ध सिद्ध आदि अन्य आलोचना के कुछ विद्वान  
 इ विषय में बहुत कुछ उधा है अर्थात् अर्थ डिपा-  
 वाणी लघु के लिहांत में यह गुणवत्ता है डि यह डिदी  
 ज्ञान की लघुता इससे व्यापक परिणामों के लामन  
 एलडा विचारित इता है। साथ उलडा यह मत भी  
 होत है डि ज्ञान की लघुता डिने लघुम और परिधि-  
 अति विशेष में विचारित हो जानी चाहिए। पाशु  
 ज्ञान की लघुता काँ इलौरी से विचारित उल में  
 अर्थ डिपा काही अर्थ अलमकिलह हाँ जाते है।  
 इललिह ज्ञान हाँ लमनिड कापाए गही है जालय।  
 इल लिहांत में निगंति दोष बतलाए जा लउत

